International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-11-2021, Accepted: 12-12-2021, Published: 27-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 95-96

राजभाषा हिन्दी का सरल और सहज प्रयोग (मालवांचल के संदर्भ में)

नेहा दीक्षित[1], नंदकिशोर पाटीदार[2]

[1] (स.प्रा. हिन्दी साहित्य) डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] लाइब्रेरियन पुस्तकालय एंव सुचनाविज्ञान विभाग श्री जवाहररलाल नेहरु विधी महाविद्यालय, मन्दसौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

जिस प्रकार हमारी साधारण बोलचाल में किसी भाषा का महत्वपूर्ण माना गया है, उसी प्रकार प्रशासकीय कार्यौ में देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा का महत्वपूर्ण माना गया हैं। अतः मालवा प्रान्त में भारतीय संविधान के अनुसार राष्ट्रभाषा का उल्लेख नहीं है अपितु संविधान की धारा 343–1 के अंतर्गत भी राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी के प्रयोग ही महत्वपूर्ण माना गया हैं।

मूलशब्दः राजभाषा, सहजभाषा, सरलभाषा, मालवांचल, प्रशासनिक

प्रस्तावना

किसी राज्य या प्रशासन का सरकारी कामकाज की भाषा को राज भाषा कहा जाता है। राज भाषा के माध्यम से समस्त प्रशासनिक कार्य संपादित होते है। यूनेस्को के अनुसार राजभाषा उस भाषा को कहा जाता है तो सरकारी कामकाज की भाषा के रुप में स्वीकार की गई हो और शासन तथा जनता के बीच आपसी संपर्क के काम आती हो हिन्दी देवनागरी लिपी में लिखी जाती हे।

इस अवधी में हिन्दी भाषा में साहित्य निर्माण के साथ साथ सभी क्षेत्रो मे उसके प्रयोग किये जाते रहे है। भारत देश की स्वतंत्रता से लेकर आज तक हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की। विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

देश की आत्मा है हिन्दी

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन–आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनिकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है, कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है।

सभी मंत्रालयों और विभागों कि वेबसाइटें हिंदी में भी काम करने लगी हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जन कल्यांण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिन्दी् में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वियत होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।

हिंदी विश्वविद्यालय की योजनाएँ

भारत देष में लगभग 5 से अधिक हिन्दी विश्वविद्यालयो कि स्थापना कीं जा चूकी है। कई विश्वविद्यालयो में हिन्दी पिट कि स्थापना कीं है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंगए मेडीकलए के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्यो भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान–विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में ही उपलब्ध होंगी।

हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है। जैसा की भोपाल में अटल बिहारी वाजपयी हिन्दी विश्वविद्यालय नाम से एक विश्वविद्यालय स्थापना कीं गई एंव महात्मा गांधी अंतराष्ट्रिय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा जिसके अंतर्गत समस्त संकाय का अध्ययन हिन्दी भाषा में ही कराया जा रहा हैं।

मालवांचल क्षेत्र

मालवा का नामकरण नर्मदा–चंबल के उपजाऊ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक क्षेत्र में बसने वाले लोगों के नाम पर पड़ा। अवंति पूर्व तथा पश्चिम मालवा का संयुक्त नाम है। मालवा ज्वालामुखी के उद्गार से बना पश्चिमी भारत का एक अंचल है, जो वर्तमान में मध्य प्रदेश प्रांत के पश्चिमी भाग में स्थित है। इसे प्राचीनकाल में मालवा या मालव के नाम से जाना जाता था। मालव 'देवी लक्ष्मी के आवास का हिस्सा' कहलाता है।

यह कर्क रेखा द्वारा दो हिस्सों में विभाजित है। इस क्षेत्र में इंदौर, उज्जैन संभागों के इन्दौर, धार, अलीराजपुर, झाबुआ, खरगौन, बड़वानी, खण्डवा, बुरहानपुर, उज्जैन, देवास, रतलाम, शाजापुर, आगर मालवा, मंदसौर, नीमच लगभग 15 जिले शामिल हैं। मालवा का अधिकांश भाग चंबल नदी तथा इसकी शाखाओं द्वारा संचित है, पश्चिमी भाग माही नदी द्वारा संचित है। मालवा के अधिकांश भाग का गठन जिस पठार द्वारा हुआ है, उसका नाम भी इसी अंचल के नाम से मालवा का पठार है।

मालवा का उक्त नाम 'मालव' नामक जाति के आधार पर पड़ा इतिहास मालवा के समूचे इतिहास के दौरान यहाँ विभिन्न कबीले बसते रहे, लेकिन बौद्ध काल में मौर्य वंश के शासन में यह क्षेत्र

कला और वास्तुशिल्प में काफी विकसित हुआ। बाद में उत्तरी मालवा पर क्षत्रपों, गुप्त राजाओं और अंततः परमार वंश का शासन हो गया। राजा भोज तृतीय ने धार और उज्जैन में राजधानी स्थापित करके इसे नयी ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

"मातृभाषा मनुष्य के हृदय की धड़कन है।"
कलराज के अनुसार

हिंदी न सिर्फभारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, जो हमारे पारम्पमरिक ज्ञान प्राचीन सभ्य ता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा राजभाषा मातृभाषा के रूप में

हिन्दी शिक्षा की दृष्टि से मातृभाषा के बाद राष्ट्रभाषा अथवा वैधानिक रूप से राजभाषा का स्थान आता है। प्रत्येक बालक को अपनी मातृभाषा जानने के बाद एक ऐसी राष्ट्रभाषा का ज्ञान अवश्य होना चाहिए जिसके माध्यम से वह अपने देश के अन्य भाषा–भाषियों के साथ सम्पर्क स्थापित कर सके।

भारत के जिन प्रदेशों में हिन्दी मातृ–भाषा नहीं है, वहाँ पर हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के नाते द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। भारतीय गणराज्य के प्रशासनिक कार्य में यह भाषा केन्द्रीय सरकार और विभिन्न राज्यों की सरकार के बीच संचारण में प्रयुक्त होगी राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय गौरव और सम्मान का प्रतीक है।

सरकारी कामकाज में सरल और सहज हिंदी के प्रयोग :–

हिन्दी भाषा एक बहुआयामी भाषा है। यह बात इसके प्रयोग क्षेत्र के विस्तार की देखते हुए भी समझी जा सकती है। यह अलग बात है कि हिन्दी भाषा की बात करते समय हम सामान्यतः हिन्दी साहित्य की बात करने लगते हैं। इसमें संदेह नहीं कि साहित्यिक हिन्दी, हिन्दी के विभिन्न आयामों में से एक है, लेकिन यह केवल हिन्दी के एक बड़े मानचित्र का छोटा–सा हिस्सा है, शेष आयामों पर कम विचार हुआ है राजभाषा हिन्दी और उसका विकास' पुस्तक उल्लेखनीय है, हिन्दी भाषा की बात करते हुए आम तौर पर हिन्दी साहित्य का अर्थ लिया जाता है, किन्तु आज हिन्दी के क्षेत्र में बड़ा विस्तार हुआ है।यह स्पष्ट दिखाई देता है

भाषा साहित्य का महत्व

हिन्दी भाषा कई मोड़ों से गुज़रती हुई और प्रादेशिक भाषाओं से सम्बद्ध होती हुई आज कई रूपों में प्रयुक्त हो रही है। केवल भारत में ही नहीं दूसरे देशों में भी इसका प्रचार एवं प्रसार बढ़ रहा है। हिन्दी मुख्यतः निम्न रूपों में प्रयुक्त हो रही है :–

1. मातृभाषा के रूप में हिन्दी।
2. प्रादेशिक भाषा के रूप में हिन्दी।
3. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी।
4. शिक्षा माध्यम के रूप में हिन्दी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डा0 बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन।
2. डेयूनः मेडिवल मालवा पृ 362
3. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास डॉ. सुरेन्द्र माथुर साहित्य प्रकाषन दिल्ली संस्करण 1962।
4. विश्व हिन्दीः डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
5. हिन्दी साहित्य का भाग–1 ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी तृतीय संस्करण 1985।
6. राष्ट्रभाषा हिन्दीः समस्याएं और समाधान
7. वाजपेयी कृ' हिन्दी का यात्रा–साहित्य एक विहंगम दृष्टि विवमोहन तिवारी आलेख प्रकाषन दिल्ली संस्करण – 2013।
8. राजभाषा हिन्दी रू डॉ, भोलानाथ तिवारी